UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180867

UNIVERSAL
LIBRARY

नायब, घासीराम वर्मा, जुगलकिशोर
द्विवेदी, गेंदालाल राजावत, शिवकुमार
शर्मा, प्रेमनारायण सोनी, स्वयंप्रकाश
आदि ।

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81.6/M23M Accession No. G.H. 1234

Author मालव लोक साहित्य परिषद

Title मालवा की लोक कथाएँ । 1952

This book should be returned on or before the date last marked below.

धन्यवाद !

मालवी कविताहोण की पोथी छपाड़वा को विचार नरादन से चली र्‌यो थो। कार्तिक जात्रा को मोको ने फर कवि-सम्मेलन को तदबो, दोईने पाछे उक्सायो के पोथी छपई ने सामने लावा की याज बखत हे। 'मालव-लोक-साहित्य-परिषद' का सोभाग से कँवर भूपेन्द्रकुमारजी सेठी सा'ब (बिनोद मिल्स, उज्जैन) नें इके छपावा को भार अपना साथे लईने सब कई ठीक करी दचो। इतरों होताज फिकर मिटी, ने मन हरख्यो। परिषद आड़ी से भूपेन्द्रकुमारजी के हिरदा से लाख-लाख धन्यवाद !

श्याम परमार

मंत्री,
मालव लोक-साहित्य-परिषद्
उज्जैन।

दो शब्द

मालव लोक साहित्य-परिषद् की तरफ से मालवी बोली की नया ढग की कविता को यो संग्रह मालवी-जनता का हाथ में पोंची रियो हं। इससे अवश्य सबखे प्रसन्नता होयगी। मालवी बोली में जो साहित्य हं, वो बिखऱ्यो हुवो हं, एक जगे नी हं, इससे हमखे अपना साहित्य की विशेषता को चेये उतनो भान नहीं होने पायो हं। 'मालव' लोग इस देश में भोत पुराना जमाना से हं, इनको गणतंत्र इतिहास में अपनो खास महत्व और पुरानोपन रखे हं। सिकंदर का दांत खट्टा करनेवाळा मालवी लोग था, महाभारत और पुराणा में मालवी लोगों की कई कथा-गाथा भरी हुई हं, तब उनकी भाषा, उनको साहित्य कई पिछड्योज रियो होयेगा, या तो हुईज् नी सके, पर मालवा ने बड़ा उलट-पुलट, हवा का फेरफार देख्या, ऊमे अपनो साहित्य भी वे बचई नी सक्या, पर जिस अवंती भाषा खे मालवा ने जनम दियो और जिससे प्राकृत, अपभ्रंश, महाराष्ट्री आदि पनपी फली वा भाषा ज् आज मालवी का नाम से चली आवे हं। जो उदाहरण पीछे का मिले हं उनमें और आज की मालवी में भोत फरक नी पड़्यो हं। जितनो फरक नगर और गांव की बोली में दिखे हं, उतनोज् पुरानी और नई में है। फिर बी इसमें वोज् ओज्, वाज् शक्ति और विचार खे हृदय का साथ प्रकट करने की क्षमता है। आज बी जिनी तरे सीधी सी गद्य में श्रीनिवासजी जोशी जानदार चीज कईदे, उसी तरे पद्य में हमारा नया कुशल कवि आनन्दराव दुबे, मदनजी व्यास, भंवरजी, जौहरीजी, उप्पलजी, आदि बी सफलता और मधुरता का साथ चुभती चीज कं दे हे। इना संग्रह की कविता जिन लोगों ने कवि से एक बखत बी सुनी होयगी वे म्हारी बात खे ठीक मानेगा और या संग्रह में पढ़ी के बी स्वीकार करेगा।

इना संग्रह की कविता देखो के मालवी बोली कितनी जानदार है, कितनी मिठी है और उसमें किस तरे अपनो हृदय बोली उठे है, यो प्रामाणित हुई जावे है। जो भाषा आज अपना प्रदेश का एक करोड़ नर-नारी बोले-बापरे हैं, वा हजारो साल पुरानी होते हुए भी अपने आप में पूरी तरे सक्षम-शक्तिशाली बनी हुई है। जो भी उको कोई साहित्य जादा छप्यो नी पर उसने अपनी सुन्दरता और मीठापन खे सदा की तरे कायम बनई रख्यो है। संग्रह की सारी कविता इनी बात को स्वयं सबत देगी, यो संग्रह इस तरे की कविता को पेलोज है, और यो सम्मेलन बी मालवा में तो पेलोज् है, पर ये कविता मालवा का लोगों खे अपनी बोली को जादू बताया बिगर नी रेगी, म्हारो यो पूरो विश्वास है, अब या परम्परा कायम रेगी और आगे और साहित्य भी प्रकाश में आतो रेगो।

यो तो शुभारम्भ है। म्हारी तो या कामना हे के हम अपनी इनी मीठी मातृ-भाषा खे नया साहित्य से इतनी पुष्ट बनें, के हमारा सारा काज, ज्ञान, वगेरा मालवी मेंज होने लगे, जिनखे अपनो अपनी मातृ-भाषा को गर्व नी, वे राष्ट्र भाषा या राष्ट्र को गौरव किस तरे रख सके, आशा है हमारा मालवी बन्धु-भगिनी अपनी एक करोड़ लोगों की बोली को भण्डार भरने में पीछे नी रेगा।

परिषद् को यो प्रयत्न प्रेरणा को कारण बने इसी सदिच्छा के साथ हूं इना संग्रह को स्वागत करुँ हूँ।

२५-१० ५२]

—सू० ना० व्यास

मालवी—मघदूत

(१)

मूल—

कश्चित्कान्ता विरह गुरुणा स्वाधिकारः प्रमतः
शापेनास्तंगमित महिमा वर्ष भोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रेजनक तनया स्नान पुण्योदकेषु,
स्निग्धच्छाया तरुषुवसतिं रामगिर्याश्रमेषु।

अनुवाद—

सेवा से हो विमुख पति से वर्ष को शाप पैके,
स्त्री से बिछड़ी कर कोई यक्ष एकान्त लैके।
रामाद्रीका गहन-वनका-जै बस्यो-आश्रमों में,
सीतास्नानोदक-शुचि-बन्या, था हरा झाड़का में।

(२)

मूल—

तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबला विप्रयुक्तः सकामी,
नीत्वामासान्कनक वलय भ्रंश रिक्तः प्रकोष्ठः।
आषादस्य प्रथम दिवसे मेघमाश्लिष्टसानुम्,
वप्रक्रीडा परिणत गज प्रेक्षणीयं ददर्श।

अनुवाद—

यूं पर्वत पे विरह सहिके मास थोड़ा बिताया,
दुबलो हूतनो वह बन गयो हाथ कंगन गिराया।
चोटी पर जब घन-घिरया देख आसाढ़ आयो,
मानो हत्ती गिर सिखर पे खेलने में रमायो।

(३)

मूल—

तस्यस्थित्वा कथमपिपुरः कौतुकाधान हेतो,
रन्तर्बाष्पश्चिर मनुचरो राजराजस्य दध्यौ।
मेघालोके भवति सुखिनोप्यन्यथावृत्तिचेतः,
कण्ठाश्लेषः प्रणयिनीजने किंपुनर्दूरसंस्थे।

अनुवाद—

आंसू रोकी कर किसी तरे यक्ष हुई के अधीर,
देखी रयो थो प्रिय विरह की पीर पैके गंभीर।
बादल छावे तब बिछड़नो कोनखे हे सुहावे,
परदेसीखे विरह दुगनीं चोंट दिल पे लगावे।

(४)

मूल—

प्रत्यासन्ने नभसि दयिता जीवनालम्बनार्थी,
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्।
स प्रत्यग्रैः कुटज कुसुमैः कल्पितार्घायतस्मै,
प्रीतः प्रीति प्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार

अनुवाद—

आई वर्षा समज उसने भेजनेखे संदेसो,
'प्यारी, मैं हूं कुशल अबला-जीवनाधार' एसो।
लै हातों में नव-कुसुम वो मेघखे अर्घ्य देने,
प्रीती का साथ मींठा वचन वह लग्यो यूं लगातार केने।

(५)

मूल—

धूमःज्योति सलिलमरुतां सन्निपातः क्वमेघः
संदेशार्था क्वपटु करणै प्राणिभिः प्रापणीयाः।

इत्यौत्सुक्यादपरि गणयन्गुह्यकस्तं ययाचे,
कामार्ता हि प्रकृति कृपणाश्चेतना चेतनेषु ।

अनुवाद—

धूँवों-तेजी जल मिल हवा से बन्यों बादलो काँ ?
संदेसो जो चतुरजन से जैसके दूत यों काँ ?
कैसो पागल ! समज बिन इने ओर कां याचना की ?
कामी खे है सुद बुध नहीं, चेतना चेतनों की ।

(६)

मूल—

जातंवंशे भुवन विदिते पुष्करावर्तकानाम्,
जानामित्वां प्रकृति पुरुषं कामरूपं मघोनः ।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद्दूर बन्धुर्गतोऽहम्,
यांचामोघा वरमधिगुणे नाधमें लब्धकामा ।

अनुवाद—

पायो तूने यह कुल बड़ो पुष्करावर्त को है,
इच्छा रूपी सचिव समझूं देवता इन्द्र को है ।
प्रार्थी हूँ मैं विरह बस या प्रार्थना की बड़ासे,
नी बी हो तो बुरै नीं पर फल मिले जो कबी क्षुद्रजन से

(७)

मूल—

संतप्तानांत्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियायाः
संदेशं मे हर धनपति क्रोध विश्लेषितस्य ।
गन्तव्याते वसति रलका नाम यक्षेश्वराणाम्,
बाह्योद्यानस्थित हरशिरश्चन्द्रिका धौत हर्म्या ।

अनुवाद—

संतप्तोंका शरण जलद ! यों संदेसो प्रिया को,
लैजा, मैं तो धनपति बन्यो पात्र हूं अ-कृपा को।
थारे जानो नगरी अलका, शंभु जो बाग बाहर,
माथा की चंद्रिका से धवल-धुल दिखे है जहां सौध-सुन्दर !

(८)

मूल—

त्वामारूढं पवन पदवी मुद्ग्रहीतालकांताः
प्रेक्षिष्यन्ते पथिक वनिताः प्रत्ययादाश्वसन्त्यः।
कःसन्नद्धे विरहविधुरांत्वय्युपेक्षेत जायां,
नस्याद्न्योऽप्यहमिवजनो यः पराधीन वृत्तिः।

अनुवाद—

तू जावेगो पवन पथ से बाल मूँ से हटैके,
देखेगी वे पथिक-वनिता चित्त में धीर लैके।
तू आयो के विरही अपनी पास आवे प्रियाके,
म्हारा जैसो परवस पड़्यो कोन रेवे विदेसे ?

(९)

मूल—

मंदं मंदं नुदति पवनश्चानुकूलो यथात्वाम्,
वाकश्चायं नदतिमधुरं चातकस्ते सगंधः ।
गर्भाधानक्षण परिचयान्नून मावद्ध मालाः
सेविष्यंते नयन सुभग खे भवन्तं बलाकाः।

अनुवाद—

धीरे-धीरे पवन चलके मेघ, थारे बढ़ावे,
डामी बाजू मधुरस भरी पी पपैयो सुनावे।

गर्भाधान क्षण समझके बांद बगली कतार,
देखेगी वे गगन चढ़के नेन में लैके प्यार ।

(१०)

मूल—

तांचावश्यं दिवसगणना तत्परामेक पत्नी,-
मव्यापन्ना मविहत गतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृ जायाम् ।
आशाबन्धः कुसम सदृशं प्रायशोह्यंगनानाम्,
सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रूणद्धि ।

अनुवाद—

भाबी थारी दिन गिन रई पोंचके देखजे तू,
दुबली पाले पतिव्रत सदा, जा अवस लेखजे तू ।
नारी को दिल सुमन सरको आस में जीवतो रे,
मुर्झावेजो विरह बस हो, प्यार पैके खुली रे ।

(११)

मूल—

कर्तुंयच्च प्रभवति मही मुच्छलीन्ध्रामवन्ध्यां,
तच्छ्रुत्वाते श्रवण सुभगं गर्जितं मानसोत्काः ।
आकैलासाब्दिसकिसलयच्छेद पाथेयवन्तः,
सम्पत्स्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः ।

अनुवाद—

तू गरजे तो धरणी फलती, छत्रीयाँ ऊग आवे,
सुन हंसो का मन मचलता, मानसेर याद आवे ।
नास्वो लैके नरम कमल की नाल को चोंच में वे,
जावे कैलास थारे गगन-पथ वे संग सीधो बनावे ।

श्रीनिवास जोशी

मंत्री म्हारा लाड़ला

मंत्री म्हारा लाड़ला दोरा पे जायरे भइ,
दोरा पे जइने भत्तो कमायरे भइ ॥
भोळी भाळी जनता दरसण खे तरसे,
मंत्री मन में हरषे, फूल्या नी समायरे भइ ॥
सभा-मिटिंग में ... बातां ई हांके,
लोग धूळो फाँके, ई मजा उड़ायरे भइ ॥
हार-अतरपान को भोत आवे खरचो,
फोटू छापे परचो, ई रुबाब जमायरे भइ ॥
दिन भर अइंवइं मोटर में भटके,
सांची को तो खटके ओर लगे लायरे भइ ॥
जेल ने खादो थोड़ो सी बादी,
बाकी बरबादी यूं राज चलायरे भइ ॥
जन सेवा की बात से व्होट कमइने,
फिर गाळ खइने ई सदा कुटाय रे भई ॥
मंत्री म्हारा लाड़ला.....

श्री प्रकाश उप्पल

मत रूठे रे म्हारा बल्या !

मत रूठे रे म्हारा बलद्या, लइ ले चनिक विसामो !

अबी बादला आवा वाला-
झर-झर रोई पड़ेगा,
वी रोया के, थान माटी में-
थेरा पांव गड़ेगा;
अरे आलसी देख दूसरो-
बलद्यो करे मजूरी,
थारा से तो नगा काम की-
म्हारी केड़ी भूरी;

मरद् बनीग्यो, काम चोट्टो, तू भूरी को मामो !

हवा सरीको दो.ड्या करतो-
इकनो कणे सिकायो ?
गेल्यो हे तू , थारे तो इन
मोरां ने भर मायो;
अनी खेत का पाछे तो वी-
झूम-झूम ने नाचे,
धरती को नोतो मोरां पे-
दूर बादला बांचे;

बाख्या का खाता में, म्हारो मती लिखाजे नामो !

श्री बसन्तीलाल 'बम'

काळजा की कोर

टूटो-फूटो टापरो ने टप-टप पाणी पड़े,
ठंडो-ठंडो बायरो के काळजो फाट्यो पड़े।
मूँडा में अब दाँत नी हे, पेट में भी आँत नी हे,
हाथ में ली लाकड़ी, ने कमर हुइगी बाकड़ी,
तो गांव का लोग सारा म्हके डाकण कणे लग्या।
राम जाणे एक दिन जद म्हारो बी घर बार थो,
छोरा-छोरी घर में था ने रामजी को राज थो,
पण कँई बतऊँ बेटा दुःख का बादळा टूटी पड़्या,
राऊ-केतु एक हुईने गोळा सरका फूटी पड़्या।
राजुड़ो का काकाजी उना लोक में जदे गया,
मटका सरका माणकचन्दजी फूली ने पोमाईग्या,
तेरमां का दिन म्हारे कर्यावर जद करनो पड़्यो,
इतरा आया जिमणे के घर म्हारो धल्लो पड़्यो।
गांव कँई, घर-घर में माताबई को बावो जद चल्यो,
छीती मांकी छोरी, भूला बा को छोरो उतरीग्यो,
धापुड़ी कंचन ने केस्यो, घांटी वाळा को जमई,
ओड़ी वाळा मुन्ना बा की छोरी सांजे मरी गई,
इनी ठंडी लाय की जद झाल घर-घर में समई,
काळजा की कोर म्हारी, माथा की खिर मोर म्हारी,
राजूडी रिसई गई, बूढ़ापा को लाकड़ी थी,
इनी ठंडी लाय में वा छोरी ने समई गई।
बी मर्‍या तो कँई हुओ, बस म्हारे भी मारी गया।
रोऊं हूं याँ रात दिन बी अपणा के तारी गया।

के, लो क्योंनी ! बिना कँटरोल का मिले है चादरा।
अन आया हो तो करता जाव, मालवा की जातरा॥

अबे ई जातरा होण लगी री हे,
ने बेन होण भइस यूँ कइरी हे—
के जातरा में बारा बाजू बंद मोलइदे,
ने "भाभी" से साँते चलने की कइदे–
तो रँग रँगीली दोई, जातरा में जावाँगा,
ने वां से मन भावती रकम लावाँगा॥
कइँ, "कबीरजी" म्हाराज, का भजन सुणाँगा–
कइ "रामदेवजी" का, दरसण करांगा !
अरे ! चकरी का झूलामें, झूलांगा हम,
तो थोड़ी देरतो दुखके भूलागा हम।
के हाथी-घोड़ाका खेलकणा मिले।
ने "तोता होण पींजरा का माँय भी झूले !"
गारा का हाथी ने लकड़ा की रेल,
डमरू का बाजा ने चकरी को खेल।
ओहो ! खेलकणा होण से भर्‌या हे आखा चोंतरा।
ने आया हो तो देखीलो, मालवा की जातरा॥

छम्म-छम्म बाजे हे, छकड़ा की घूंघरमाल।
बीच-बीच में लगे हे धपड़ा की ताल॥
ऊमे होली का गाणा गइ-या,
मन का मजाकी वी बात सुणइ-या।
एकज बात बुरी के ई चरकोपाणी पीवे,
ने कजा कां की दुकान पे सुध-बुध खोवे।
ईसेज चढ़े हे इनके एकांतरा–
ने एसी भराय हे मालवा की जातरा॥

"रामाबा "भग्गोबीर" ने "कालू" दादो।
ई जातरा में आया ने इनके मजो लादो।
पण जीका कने पइसा नी होय वे कीके के ?
खाली फिरे, देखी ने सुख माने,
"सब पइसा की माया हे या बात जाणे।
पण हूं कूँ हूँ के एक मेल-जोल की बात हे बड़ी
मिलने जुलने से जुड़े मन की कड़ी।
ईकाज सारु ई जातरा भराय हे-
ने होली की जातरा गामे-गाम जाय हे।
दरसण मेला भजन की घड़ी-
वा देखो फाग की लागीरी झड़ी।
साल बरस में फेर मेला लगेगा,
ने म्हारा मनमें फेर या बात जगेगा -
के दुनिया को जीणो भी तो हे एक जातरा
ने आया हो तो देखीलो मालवा की जातरा॥

श्री गिरवरसिंह 'भंवर'

पियाजी मानों म्हारी बात !

आसमान में सूरज असत्यो आई बेरण रात
पियाजी ! मानो म्हारी बात,
घणा रिसईल्या खूब पचईली, बीती दो बरसात
पियाजी ! मानो म्हारी बात ।

जदे तमारा सूना घरमें-नवी नवी हूँ अई थी,
रोती थी तो तमने म्हारे पुचकारी समजई थी
पल्ला से बांदी ने म्हारे धूम धड़ाका से लाया,
साथ सहेली माय बाप सब रोता छोड़ी ने आया,
ओर उनी राते जद चंदो छिपी-छिपी ने देखी रियो थो,
ऊपर की ओरी में अपणी बात सुणी ने सरमई रियो थो,
तो झीणो-झीणो घूंघट खोल्यो पकड़ी म्हारा हात,
पियाजी मानो म्हरो बात ।

उनी रात से प्रीत बढ़ी, तम मनका मन में रेता था,
मीठा-मीठा बोल्या करता कदी नी कड़वी केता था,
ओर बिछुड़ने को दुखड़ो हूं माय बाप को भूली गी,
मिल्या देवता घर म्हारो यो, हूँ समजी ने फूली गी,
याद करो वी वचन तमारा जो बांध्या म्हारा पल्ले हे,
क्षत्री का बेटा अपणा दिया वचन नी भूले हे
मरणे तक की सांते ठानी बीच में छोड़ो साथ !
पियाजी मानो म्हारी बात ।

रोज कागलो अपणा बड़ पे बेठी-बेठी ने बोले,
सुणी-सुणी ने म्हारो हिरदो, प्यासी हिरणी सो डोले,
आज पियूजी आता होतो उड़ी डाल से जाजेरे
दूर देस से म्हारा पिय के आज मनई के आजे रे
बरस बरस की एक रात हे, छे-छे, महना का दन हे,
पिघली ने पाणी सो बेवे, रोज आंख से म्हारो मन हे,
रोज डरावे म्हके एकली या भादव की रात
पियाजी मानो म्हारी बात।

हरो हरो यो खेत हमारो राते जिनमें चंदो आवे,
ओर डागला पे बेठीने रोज चांदणी गाणो गावे,
मोर-मोरनी और पपय्यो अपणा जोड़ा से खेले
अरे तमारा मनकी राणी कदसे यो दुखड़ो झेले
मंदर में बी राधाजी के रोज मनाणे के जऊँ हूँ
आंसू आंसू की माला भी नित हूँ पेरऊ हूँ
बोलो तमसे नंद लालजी जदे रिसई ने जाता था
तम बी केसा रोइ रोइ ने अपणो दुखड़ो गाता था
अबे बणीग्या भारा सरका मन में जरा दया नी आवे
हारी गी हूँ रोते रोते धीरज म्हारे कूण बंधावे-
तमतो म्हारा मन मंदिर का राजाजी हो नाथ,
पियाजी मानो म्हारी बात
पियाजी बीती दो बरसात

प्रो. भगवन्तशरण जौहरी

म्हारा मन में हूक उठे जद....

नई नवेली बैरा जई री पीअर पेलमूपेल।
ऊ का भीतर-बायर वइ री गेरी ठेलमूठेल॥

म्हारा मन में हूक उठे जद
तम कईं कर लोगा!

तम ने तो कई दियो के पीअर जाणों चोखो काम।
पेलां-पेली नी जाँवा तो हुई जांवा बदनाम॥
पण म्हारा जीवड़िया ऊपर कईं बीते सिरदार।
पीपल जैसा काँपे म्हारी मन बीना का तार॥
तम के नी देख्या था जद तक थी कईं ओरज बात।
अब तो दिन पलटीग्या पिछजी, हुई गी सूनी रात॥
नी भावे जी बेन्या-बीरा सखी--सहेल्या--लोग।
दो दन की संगत में तमने कईं लगायो रोग॥
अब आँसू का बीच तमारो फोटू चमकेगा।
रई--रई के फिर मिलवा सारू कईं तो धमकेगा॥
पर तम ठेर्या मर्द, मुसाला का भाटा की जात।
तम के तो कईं 'अड़के' हम बेरा-मानस को साथ॥
हम मेना की जात झाड़ पे कद तक तरसाँगा।
जीव की बदली लई काँ जावां, कां पे बरसांगा॥
जाओ हम नी बोलां, तम दईग्या हिरदा में दाग।
ऊपर टपका पड़ता रेगा, भीतर सलगे आग॥

घरी लेगा सखी-सहेल्या कंई कूँगा हूँ बात ।
भारी आंखां देखी के वी छेड़ेगा दन—रात ॥
हूँ तो भोली नार ठगी ली, तमने हाथे-हाथ ।
ऐसो हूं कईं करूं न जीसे छूटे अपनो साथ ॥
कागद भेजे कूँण, भणी होती तो वा बी गैल ।
नरकां पड़जे जिना गधा ने चालू की या रेल ॥
मछली सी अई-वंई बिलखूंगा, दूर कयाँ रस जाय ।
ऊज दई सके सांता म्हारे जी ने पाड़्यो घाव ॥

श्री मानसिंह 'राही'

भारी करी राम····!

भारी करी राम हूं तो ऊबो लुटीग्यो
अणी जात्रा का मांय म्हारो खुल्यो कटीग्यो

हूँ तो ऐसांज गरीब ने आपदा या अई
री जेब खावा के नी एक पई
कोई खावे खार्‌या ने कोई मिठई
नाना ने मोटा, ने लोग लुगई
कोई भूले भूलो ने कोई नाटक में जाय
देखी देखी के वी फूल्या नी समाय
कोई करे धोती ने कपड़ा को मोल
कोई करे बरतन ने भांडा को तोल

पण म्हारा तो मन की मनमेंज री गई
गुन्डा उड़इग्या सगली कमई
धरम् करवा आयो ने करम् फूटीग्यो
अणी जात्रा का मांय म्हारो खुल्यो कटीग्यो ॥

निवेड़ी के खेती ने बाड़ी को काम
धान बेंची बांची के लायो थो दाम
बइरां ने रोक्यो थो मती जाव राम
लुच्चा लफङ्गा छुड़इ लेगा दाम
पण म्हारे पे था साड़े सातो सनी
चली प.ड्यो जात्रा में पेरी के पनी
गांव छोड़ी ने अई सेर में लुट्यो
कीका पास जऊं लइ खुल्या कट्यो
नानक्या ने नानका वां रोता वेगा
खाली घरे जऊंगा तो वी कंई केगा
अणी फिकर फिकर में म्हारो डील घटीग्यो
अणी जात्रा का मांय म्हारो खुल्यो कटीग्यो ॥

'रूगो' बोल्यो के तम थाणा में जाव
थाणादार साब' के रपोट करीआव
भगवान करे ने कांई पता लगी जाय
लुटाणा थक्या पइसा पाछा मली जाय
म्हारा मन का मांय वीकी बात जची गी
हूं थोड़ोक् चल्यो के कुनवाली मिलीगी
सांमेज ऊबो थो पुलिस को सिपई
देखताज वीने खरी खोटी सुनई
इतरा में टोप वाला साब' अईगिया
म्हके घूरी के वी मांय भरईगिया

अब कां जई ने कूं म्हारो धीरज टूटीग्यो
अणी जात्रा का मांय म्हारो खुल्यो कटीग्यो ॥

नरा सारा नेता ने सेवक मिल्या
पण म्हारी समज में तो एक नी तुल्या
कोई बड़ी धरम की बातां करे
कोई फाटा खुल्वा में उपदेस भरे
इतरा में म्हारे एक मिल्यो मजूर
केतो थो ऊ दुख यूं नी वेगा दूर
ई मोटा मोटा लोग हमके यूंज लुटवाय
चोर्‌यां करावे ने खुल्या कढवाय
मजूर ने किरसान कदी कोई मिली जाय
तो भइ, कारे रुगादा, ई आपदा टली जाय

नरा मुलक से अणको नामज मिटीग्यो
अणी जात्रा का मांय म्हारो खुल्यो कटीग्यो ॥

के, लो क्योंनी ! बिना कँटरोल का मिले है चादरा ।
अन आया हो तो करता जाव, मालवा की जातरा ॥

अबे ई जातरा होण लगी री हे,
ने बेन होण भइस यूँ कइरी हे—
के जातरा में बोरा बाजू बंद मोलइदे,
ने "भाभी" से साँते चलने की कइदे–
तो रंग रँगीली दोई, जातरा में जावाँगा,
ने वां से मन भावती रकम लावाँगा ॥
कइँ, "कबीरजी" म्हाराज, का भजन सुणाँगा–
कइ "रामदेवजी" का, दरसण करांगा !
अरे ! चकरी का झूलामें, झूलांगा हम,
तो थोड़ी देरतो दुखके भूलागा हम ।
के हाथी-घोड़ाका खेलकणा मिले ।
ने "तोता होण पींजरा का माँय भी झूले !"
गारा का हाथी ने लकड़ा की रेल,
डमरू का बाजा ने चकरी को खेल ।
ओहो ! खेलकणा होण मे भर्‌या हे आखा चोंतरा ।
ने आया हो तो देखीलो, मालवा की जातरा ॥

छम्म-छम्म बाजे हे, छकड़ा की घूंघरमाल ।
बीच-बीच में लगे हे धपड़ा को ताल ॥
ऊमे होली का गाणा गइ-या.
मन का मजाकी वी बात सुणइ-या ।
एकज बात बुरी के ई चरकोपाणीं पीवे,
ने कजा कां की दुकान पे सुध-बुध खोवे ।
ईसेज चढ़े हे इनके एकांतरा–
ने एसी भराय हे मालवा की जातरा ॥

"रामाबा "भग्गोबीर" ने "कालू" दादो !
ई जातरा में आया ने इनके मजो लादो ।
पण जीका कने पइसा नी होय वे कीके के ?
खाली फिरे, देखी ने सुख माने,
"सब पइसा की माया हे या बात जाणे ।
पण हूं कूँ हूँ के एक मैल-जोल की बात हे बड़ी
मिलने जुलने से जुड़े मन की कड़ी ।
ईकाज सारु ई जातरा भराय हे-
ने होली की जातरा गामे-गाम जाय हे ।
दरसण मेला भजन की घड़ी-
वा देखो फाग की लागीरी झड़ी ।
साल बरस में फेर मेला लगेगा,
ने म्हारा मनमें फेर या बात जगेगा -
के दुनिया को जीणो भी तो हे एक जातरा
ने आया हो तो देखीलो मालवा की जातरा ॥

श्री गिरवरसिंह 'भंवर'

पियाजी मानों म्हारी बात !

आसमान में सूरज असत्यो आई बेरण रात
पियाजी ! मानो म्हारी बात,
घणा रिसईल्या खूब पचईली, बीती दो बरसात
पियाजी ! मानो म्हारी बात ।

जदे तमारा सूना घरमें-नवी नवी हूँ आई थी,
रोती थी तो तमने म्हारे पुचकारी समजई थीं
पल्ला से बांदी ने म्हारे धूम धड़ाका से लाया,
साथ सहेली माय बाप सब रोता छोड़ी ने आया,
ओर उनी राते जद चंदो छिपी-छिपी ने देखी रियो थो,
ऊपर की ओरी में अपणी बात सुणी ने सरमई रियो थो,
तो झीणो-झीणो घूंघट खोल्यो पकड़ी म्हारा हात,
पियाजी मानो म्हरो बात ।

उनी रात से प्रीत बड़ी, तम मनका मन में रेता था,
मीठा-मीठा बोल्या करता कदी नी कड़वी केता था,
ओर बिछुड़ने को दुखड़ो हूं माय बाप को भूली गी,
मिल्या देवता घर म्हारो यो, हूँ समजी ने फूली गी,
याद करो वी वचन तमारा जो बांध्या म्हारा पल्ले हे,
क्षत्री का बेटा अपणा दिया वचन नी भूले हे
मरणे तक की सांते ठानी बीच में छोड़ो साथ !
पियाजी मानो म्हारी बात ।

रोज कागलो अपणा बड़ पे बेठी-बेठी ने बोले,
सुणी-सुणी ने म्हारो हिरदो, प्यासी हिरणी सो डोले,
आज पियूजी आता होतो वड़ो डाल से जाजेरे
दूर देस से म्हारा पिय के आज मनई के आजे रे
बरस बरस की एक रात हे, छे-छे, महना का दन हे,
पिघली ने पाणी सो बेवे, रोज आंख से म्हारो मन हे,
रोज डरावे म्हके एकली या भादव की रात
पियाजी मानो म्हारी बात।

हरो हरो यो खेत हमारो राते जिनमें चंदो आवे,
ओर डागला पे बेठीने रोज चांदणी गाणो गावे,
मोर-मोरनी और पपय्यो अपणा जोड़ा से खेले
अरे तमारा मनकी राणी कदसे यो दुखड़ो मेले
मंदर में बी राधाजी के रोज मनाणे के जऊँ हूँ
आंसू आंसू की माला भी नित हूँ पेरऊ हूँ
बोलो तमसे नंद लालजी जदे रिसई ने जाता था
तम बी केसा रोइ रोइ ने अपणो दुखड़ो गाता था
अबे बणीग्या भारा सरका मन में जरा दया नी आवे
हारी गी हूँ रोते रोते धीरज म्हारे कूण बंधावे-
तमतो म्हारा मन मंदिर का राजाजी हो नाथ,
पियाजी मानो म्हारी बात
पियाजी बीती दो बरसात

प्रो. भगवन्तशरण जोहरी

म्हारा मन में हूक उठे जद....

नई नवेली बैरा जई री पीअर पेलमपेल।
ऊं का भीतर-बायर वइ री गेरी ठेलमठेल॥

म्हारा मन में हूक उठे जद
तम कई कर लोगा!

तम ने तो कई दियो के पीयर जाणों चोखो काम।
पेलां-पेली नी जाँवा तो हुई जांवा बदनाम॥
पण म्हारा जीवड़िया ऊपर कई बीते सिरदार।
पीपल जैसा काँपे म्हारी मन बीना का तार॥
तम के नी देख्या था जद तक थी कई ओरज बात।
अब तो दिन पलटीग्या पिछजी, हुई गी सूनी रात॥
नी भावे जी बेन्या-बीरा सखी--सहेल्या--लोग।
दो दन की संगत में तमने कई लगायो रोग॥
अब आँसू का बीच तमारो फोटू चमकेगा।
रई--रई के फिर मिलवा सारू कई तो धमकेगा॥
पर तम ठेर्या मदे, मुसाला का भाटा की जात।
तम के तो कई 'अड़के' हम बेरा-मानस को साथ॥
हम मेना की जात झाड़ पे कद तक तरसाँगा।
जीव की बदली लई काँ जावां, कां पे बरसांगा॥
जाओ हम नी बोलां, तम दईग्या हिरदा में दाग।
ऊपर टपका पड़ता रेगा, भीतर सलगे आग॥

घरीं लेगा सखी-सहेल्या कंई कूँगा हूँ बात ।
भारी आंखां देखी के वी छेड़ेगा दन—रात ॥

हूँ तो भोली नार ठगी ली, तमने हाथे--हाथ ।
ऐसो हूं कई करूं न जीसे छूटे अपनो साथ ॥

कागद भेजे कूँण, भणी होती तो वा बी गैल ।
नरकां पड़जे जिना गधा ने चालू की या रेल ॥

मछली सी अई-वई बिलखूंगा, दूर कर्यां रस जाय ।
ऊज दई सके सांता म्हारे जी ने पाड़्यो घाव ॥

श्री मानसिंह 'राही'

भारी करी राम....!

भारी करी राम हूं तो ऊबो लुटीग्यो
अणी जात्रा का भाय म्हारो खुल्यो कटीग्यो

हूँ तो पेलांज गरीब ने आपदा या अई
री जेर खावा के नी एक पई
कोई खावे खार्‌या ने कोई मिठई
नाना ने मोटा, ने लोग लुगई
कोई भूजे भूलो ने कोई नाटक में साय
देखी देखी के वी फूल्या नी समाय
कोई करे धोती ने कपड़ा को मोल
कोई करे बरतन ने भांडा को तोल

पण म्हारा तो मन की मनमेंज री गई
गुन्डा उड़ईग्या सगली कमई
धरम् करवा आयो ने करम् फूटीग्यो
अणी जात्रा का मांय म्हारो खुल्यो फटीग्यो ॥

निवेड़ी के खेती ने बाड़ी को काम
धान बेंची बांची के लायो थो दाम
बइरां ने रोक्यो थो मती जाव राम
लुच्चा लफङ्गा छुड़इ लेगा दाम
पण म्हारे पे था माड़े साती सनी
चली पड्यो जात्रा में पेरी के पनी
गांव छोड़ी ने अई सेर में लुट्यो
कीका पास जऊं लइ खुल्या कट्यो

नानक्या ने नानकी वां रोता वेगा
खाली घरे जऊंगा तो वी कंई केगा
अणी फिकर फिकर में म्हारो डील घटीग्यो
अणी जात्रा का मांय म्हारो खुल्यो फटीग्यो ॥

'रूगो' बोल्यो के तम थाणा में जाव
थाणादार साब' के रपोट करीआव
भगवान करे ने कंई पतो लगी जाय
लुटाणा थक्या पइसा पाछा मली जाय
म्हारा मन का मांय वीकी बात जची गी
हूं थोड़ोक् चल्यो के कुनवाली मिलीगी
सांमेज ऊबो थो पुलिस को सिपई
देखताज वीने खरी खोटी सुनई
इतरा में टोप वाला साब' अईगिया
म्हके घूरी के वी मांय भरईग्या

अब कां जई ने कूं म्हारो धीरज टूटीगियो
अणी जात्रा का मांय म्हारो खुल्यो कटीगियो ॥

नरा सारा नेता ने सेवक मिल्या
पण म्हारी समज में तो एक नी तुल्या
कोई बड़ी धरम की बातां करे
कोई फाटा खुल्या में उपदेस भरे
इतरा में म्हारे एक मिल्यो मजूर
केतो थो ऊ दुख यूं नी वेगा दूर
ई मोटा मोटा लोग हमके यूं ज लुटवाय
चोर्‌यां करावे ने खुल्या कढवाय
मजूर ने किरसान कदी कोई मिली जाय
तो भइ, कारे रुगादा, ई आपदा टली जाय

नरा मुलक से अणको नामज मिटीगियो
अणी जात्रा का मांय म्हारो खुल्यो कटीगियो ॥

मालवी–मघदूत

(१)

मूल—

कश्चित्कान्ता विरह गुरुणा स्वाधिकार: प्रमत:
शापेनास्तंगमित महिमा वर्ष भोग्येण भर्तु:।
यक्षश्चक्रेजनक तनया स्नान पुण्योदकेषु,
स्निग्धच्छाया तरुषुवसतिं रामगिर्याश्रमेषु।

अनुवाद—

सेवा से हो विमुख पति से वर्ष को शाप पैके,
स्त्री से बिछड़ी कर कोई यक्ष एकान्त लैके।
रामाद्रीका गहन-वनका-जै बस्या-आश्रमों में,
सीतास्नानोदक-शुचि-बन्या, था हरा झाड़का में।

(२)

मूल—

तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबला विप्रयुक्त: सकामी,
नीत्वामासान्कनक वलय भ्रंश रिक्त: प्रकोष्ठ:।
आषाढस्य प्रथम दिवसे मेघमाश्लिष्टसानुम्,
वप्रक्रीडा परिणत गज प्रेक्षणीयं ददर्श।

अनुवाद—

यूं पर्वत पे विरह सहिके प्रास थोड़ा बिताया,
दुबलो इतनो वह बन गयो हाथ कंगन गिराया।
चोटी पर जब घन-घिरया देख आसाढ़ आयो,
मानो हत्ती गिर सिखर पे खेलने में रमायो।

(३)

मूल—

तस्यस्थित्वा कथमपिपुरः कौतुकाधान हेतो,
रन्तर्बाष्पश्चिर मनुचरो राजराजस्य दध्यौ।
मेघालोके भवति सुखिनोप्यन्यथावृत्तिचेतः,
कण्ठाश्लेषः प्रणयिनीजने किंपुनर्दूरसंस्थे।

अनुवाद—

आंसू रोकी कर किसी तरे यक्ष हुई के अधीर,
देखी रयो थो प्रिय विरह की पीर पैके गंभीर।
बादल छावे तब बिछड़नो कोनखे हे सुहावे,
परदेसीखे विरह दुगनीं चोंट दिल पे लगावे।

(४)

मूल—

प्रत्यासन्ने नभसि दयिता जीवनालम्बनार्थी,
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्।
स प्रत्यग्रैः कुटज कुसुमैः कल्पितार्घायतस्मै,
प्रीतः प्रीति प्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार।

अनुवाद—

आई वर्षा समज उसने भेजनेखे संदेशो,
'प्यारी, मैं हूं कुशल अबला-जीवनाधार' एसो।
लै हातों में नव-कुसुम वो मेघखे अर्घ्य देने,
प्रीती का साथ मींठा वचन वह लग्यो यूं लगातार केने।

(५)

मूल—

धूमज्योति सलिलमरुतां सन्निपातः क्वमेघः
संदेशार्थाः क्वपटु करणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।

इत्यौत्सुक्यादपरि गणयन्गुह्यकस्तं ययाचे,
कामार्ताहि प्रकृति कृपणाश्चेतना चेतनेषु ।

अनुवाद—

धूँवों-तेजी जल मिल हवा से बन्यों बादलो काँ ?
संदेसो जो चतुरजन से जैसके दूत यों काँ ?
कैसो पागल ! समज बिन इने ओर कां याचना की ?
कामी खे है सुद बुध नहीं, चेतना चेतनों की ।

(६)

मूल—

जातंवंशे भुवन विदिते पुष्करावर्तकानाम्,
जानामित्वां प्रकृति पुरुषं कामरूपं मघोनः ।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद्दूर बन्धुर्गतोऽहम्,
यांचामोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ।

अनुवाद—

पायो तूने यह कुल बड़ो पुष्करावर्त को हे,
इच्छा रूपी सचिव समभूं देवता इन्द्र को हे ।
प्रार्थी हूँ मैं विरह बस या प्रार्थना की बड़ासे,
नी बी हो तो बुरे नीं पर फल मिले जो कबीं क्षुद्रजन से

(७)

मूल—

संतप्तानांत्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियायाः
संदेशं मे हर धनपति क्रोध विश्लेषितस्य ।
गन्तव्याते वसति रलका नाम यक्षेश्वराणाम्,
बाह्योद्यानस्थित हरशिरश्चन्द्रिका धौत हर्म्या ।

अनुवाद—

संतप्तोंका शरण जलद ! यो संदेसो प्रिया को,
लेजा, मैं तो धनपति बन्यो पात्र हूं अ-कृपा को ।
थारे जानो नगरी अलका, शंभु जो बाग बाहर,
माथा की चंद्रिका से धवल-धुल दिखे हे जहां सौध-सुन्दर !

(८)

मूल—

त्वामारूढं पवन पदवी मुद्गृहीतालकांताः
प्रेक्षिष्यन्ते पथिक वनिताः प्रत्ययादाश्वसन्त्यः ।
कःसन्नद्धे विरहविधुरांत्वय्युपेक्षेत जायां,
नस्यादन्योऽप्यहमिवजनो यः पराधीन वृत्तिः ।

अनुवाद--

तू जावेगो पवन पथ से बाल मूँ से हटैके,
देखेगी वे पथिक-वनिता चित्त में धीर लैके ।
तू आयो के विरही अपनी पास आवे प्रियाके,
म्हारा जैसो परवस पड़्यो कोन रेवे विदेसे ?

(९)

मूल—

मंदं मदं नुदति पवनश्चानुकूलो यथात्वाम्,
वाकश्चायं नदतिमधुरं चातकस्ते सगंधः ।
गर्भाधानक्षण परिचयान्नूनमाबद्ध मालाः
सेविष्यंते नयन सुभग खे भवन्तं बलाकाः ।

अनुवाद—

धीरे-धीरे पवन चलके मेघ, थारे बढ़ावे,
डामी बाजू मधुरस भरी पी पपैयो सुनावे ।

गर्भाधान क्षण समझके बांद बगली कतार,
देखेगी वे गगन चढ़के नेन में लैके प्यार।

(१०)

मूल—

तांचावश्यं दिवसगणना तत्परामेक पत्नी,-
मव्यापन्ना मविहत गतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृ जायाम्।
आशाबन्धः कुसम सदृशं प्रायशोह्यंगनानाम्,
सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रूणद्धि।

अनुवाद—

भाभी थारी दिन गिन रई पोंचके देखजे तू,
दुबली पाले पतिव्रत सदा, जा अवस लेखजे तू।
नारी को दिल सुमन सरको आस में जीवतो रे,
मुर्झावेजो विरह बस हो, प्यार पैके खुली रे।

(११)

मूल—

कर्तुं यंच्च प्रभवति महीं मुच्छलीन्ध्रामवन्ध्यां,
तच्छ्रुत्वाते श्रवण सुभगं गर्जितं मानसोत्काः।
आकैलासाद्विसकिसलयच्छेद पाथेयवन्तः,
सम्पत्स्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः।

अनुवाद—

तू गरजे तो धरणी फलती, छत्रीयाँ ऊग आवे,
सुन हंसो का मन मचलता, मानसेर याद आवे।
नास्तो लैके नरम कमल की नाल को चोंच में वे,
जावे कैलास थारे गगन-पथ वे संग सीधो बतावे।

———

श्रीनिवास जोशी

मंत्री म्हारा लाड़ला

मंत्री म्हारा लाड़ला दोरा पे जायरे भइ,
दोरा पे जइने भत्तो कमायरे भइ ॥
भोळी भाळी जनता दरसण खे तरसे,
मंत्री मन में हरषे, फूल्या नी समायरे भइ ॥
सभा-मिटिंग में ... बातां ई हांके,
लोग धूळो फाँके, ई मजा उड़ायरे भइ ॥
हार-अतरपान को भोत आवे खरचो,
फोटू-छापे परचो, ई रुबाब जमायरे भइ ॥
दिन भर अइंवइं मोटर में भटके,
सांची को तो खटके ओर लगे लायरे भइ ॥
जेल ने खादो थोड़ो सी बादी,
बाकी बरबादी यूं राज चलायरे भइ ॥
जन सेवा की बात से व्होट कमइने,
फिर गाळ खइने ई सदा कुटाय रे भई ॥
मंत्री म्हारा लाड़ला.....

श्री प्रकाश उपल

मत रूठे रे म्हारा बल्या !

मत रूठे रे म्हारा बलया, लइ ले चनिक विसामो !
अबी बादला आवा वाला-
झर-झर रोई पड़ेगा,
वी रोया के, आन माटी में-
घेरा पांव गड़ेगा;
अरे आलसी देख दूसरो-
बलद्यो करे मजूरी,
थारा से तो नरा काम की-
म्हारी कंडी भूरी;
मरद बनीग्यो, काम चोट्टो, तू भूरी को मामो !
हवा सरीको दो.ड्या करतो-
ठकनो कणे सिकायो ?
गेल्यो हे तू , थारे तो इन
मोगां ने भर मायो;
अनी खेत का पाछे तो वी-
झूम-झूम ने नाचें,
धरती को नोतो मोरां पे-
दूर बादला बांचे;
वाल्या का खाता में, म्हारो मती लिखाजे नामो !

श्री बसन्तीलाल 'बम'

काळजा की कोर

टूटो-फूटो टापरो ने टप-टप पाणी पड़े,
ठंडो-ठंडो बायरो के काळजो फाट्यो पड़े।
मूँडा में अब दाँत नी हे, पेट में भी आँत नी हे,
हाथ में ली लाकड़ी, ने कमर हुइगी बाकड़ी,
तो गांव का लोग सारा म्हूके डाकरा केणे लग्या।
राम जाणे एक दिन जद म्हारो बी घर बार थो,
छोरा-छोरी घर में था ने रामजी को राज थो,
पण कँई बतऊँ बेटा दुःख का बादळा टूटी पड़्या,
राऊ-केतु एक हुईने गोळा सरका फूटी पड़्या।
राजुड़ी का काकाजी उना लोक में जदे गया,
मटका सरका माणकचन्दजी फूली ने पोमाईग्या,
तेरमां का दिन म्हारे करयावर जद करनो पड़्यो,
इनरा आया जिमवा के घर म्हारो घणो पड़यो।
गांव कँई, घर-घर में मातावई को बावो जद चल्यो,
छीती मांकी छोरी, भूला बा को छोरो उतरीग्यो,
धापुड़ी कंचन ने केम्यो, घांटी वाळा को जमई,
ओड़ी वाळा मुन्ना बा की छोरी सांजे मरी गई,
इनी ठंडी लाय की जद झाल घर-घर में समई,
काळजा की कोर म्हारी, माथा की सिर मोर म्हारी,
राजूडी रिसई गई, बूढ़ापा को लाकड़ी थी,
इनी ठंडी लाय में बा छोड़ी ने समई गई।
वी मऱ्या तो कँई हुओ, बस म्हारे भी मारी गया।
रोऊं हूं यों रात दिन वी अपणा के तारी गया।

कवि होण को परिचय

◆ आनंदराव दुबे—

मालवी का मंज्या हुवा कवि और कार्यकर्ता। ९४, चन्द्रभागा इन्दौर।

◆ मदन व्यास—

उगता हुवा कवि और ग्राम-सेवक। टोंक खुर्द, देवास।

◆ गिरवरसिंह 'भँवर'—

राजस्थानी और मालवी का कवि, नागदा।

◆ भगवंत शरण जौहरी—

हिन्दी का कवि। मालवी में लिखने लग्या है। माधव कॉलेज में प्रोफेसर है, उज्जैन।

◆ प्रकाश उप्पल—

मालवी का उगता हुवा कवि। निवास बड़नगर।

◆ मानसिंह 'राही'—

मजदूर होण का प्यारा कवि। उज्जैनवासी।

◆ बसन्तीलाल बम्ब—

पत्रकार, कवि और कार्यकर्ता। कंठाल, उज्जैन।

◆ सू. ना. व्यास—

'विक्रम' का संपादक। 'मालवसुत' उपनाम। भारती भवन, उज्जैन।

◆ श्रीनिवास जोशी—

ा हास्य लेखक और कवि। ८९७, अमराई, पूना।

आगामी-प्रकाशन

- सासूजी रिसायगा

  —श्रीनिवास जोशी

- मालवी मेघदूत

  —श्री सू. ना. व्यास

- मालव जनपद और
  उसका क्षेत्र विस्तार

  —श्री सू. ना. व्यास

- मालवी बोली—
  उत्पत्ति और विकास

  —श्री श्याम परमार

- मांच-मालवी लोक-नाट्य

  —श्री त्रिभुवननाथ दवे

- हीड—गूजर गीत-प्रबन्ध

  —श्री बसन्तीलाल बंम

- म्हारो नाम बाल्यो है

  —श्री मदनमोहन व्यास

मुद्रक-मोहन प्रिंटिंग प्रेस उज्जैन